International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 4; April 2017; Page No. 281-282

महाकवि कालिदास का प्रकृति चित्रण

डॉ0 नीलम रानी

सहायक प्रोफेसर (संस्कृत) राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महेन्द्रगढ़, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

मानव का सृष्टि के आदिकाल से ही प्रकृति से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। हमारा समस्त साहित्य प्रकृति के रमणीय अंचल से विरचित हुआ है। हृदयगत मनोभावों के प्रबल हो उठने पर मानव का प्रकृति से तादात्म्य हो जाता है। मानव के सुख–दुःख में प्रकृति सहचरी बनकर सहयोग देती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में महाकवि कालिदास के प्रकृति–चित्रण पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है। कालिदास का प्रकृति–चित्रण संस्कृत साहित्य में विशेष स्थान रखता है। वे प्रकृति के प्रवीण उपासक थे। उनकी सूक्ष्म रसदर्शिनी दृष्टि अत्यन्त व्यापक, सावधान और प्रकृति के मार्मिक रहस्यों तथा स्थलों की उद्भावना में पूर्ण समर्थ है। कालिदास का प्रकृति–चित्रण यद्यपि कल्पना चक्षु दृष्य है, किन्तु उनकी मनोहरता और सरसता सहृदय के हृदय को भी सौन्दर्यानुभूति से भर देती है। कालिदास बाह्य और अन्तःप्रकृति दोनों के सफल कवि हैं। कालिदास के प्रकृति वर्णन में सहृदयता तथा कल्पना की मोहकता पाई जाती है। वे सुन्दर, मोहक, मनोरम और समुज्ज्वल प्राकृतिक रुपों, पक्षी एवं दृष्यों के चित्र हैं। प्राकृत उपमाओं के वैविध्य के साथ अलंकृत मनोहर क्रीडाओं से सुशोभित प्रयोगों का रमणीय चित्रण दृष्टव्य हैः–

क्वचित्प्रभालेपिभिरिन्द्रनीलैर्युक्तामयी यष्टिरिवानुविद्धा।
अन्यत्र मालासितपंकजानामिन्दीवरैरुत्खाचितान्तरेव।।
क्वचित्खगानां प्रियमानसानां कादम्बसंसर्गवतीव पंक्तिः।
अन्यत्र कालागुरुदत्तपत्रा भक्तिर्भुवष्चन्दनकल्पितेव।।
क्वचित्प्रथा चान्द्रमसीतमोभिष्छायाविलीनैः शबलीकृतेव।
अन्यत्र शुभ्रा शरदभ्रलेखा रन्ध्रेष्विवलक्ष्यनभः प्रदेश।।
– रघुवंशम् (13 सर्ग)

प्रस्तुत श्लोक में सुन्दर अंगों वाली सीत! गंगा और यमुना के संगम को देखो। कहीं तो गंगा फैली हुई कान्ति वाले नीलमों के साथ पिरोये गये मुक्ताओं के हास के सदृष प्रतीत होती है। कहीं–कही तो ऐसा प्रतीत होती है मानो श्वेत कमलों की माला में, मध्य–मध्य में, नीलकमल गुंथे हैं। कहीं नील हंसों की श्रेणी में मानस–प्रेमी धवल हंसों की मिली हुई पंक्ति के समान वह प्रतीत होती है। कहीं कालगुरु की पत्र रचना की हुई पृथ्वी का चन्दन रचना की ज्ञात होती है। कहीं छाया में छिपे हुये अन्धकार से कुछ श्यामलता लिये चन्द्रमा की धवल प्रभा के समान रमणीयता ज्ञात होती है। कहीं वह शरत्कालीन उज्ज्वल मेघखण्डों के छिद्रों से दिख पड़ने वाले आकाश के साथ समता धारण करती है।

कालिदास का कुमारसम्भव वास्तव में मानवीय सौन्दर्य के साथ–साथ प्राकृति सौन्दर्य का अद्भुत उदाहरण है। इसमें हिमालय के अनेक सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। कुमारसम्भव में पार्वती की समानता लता से की गई है, वह प्रकृति वर्णन का अनुपम उदाहरण है यथा –

''आवर्जिता किंचिदिवस्तनाभ्यां वासो वसाना तरुणार्करागम्।
पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा संचारिणी पल्लविनी लतेव।।''
– कुमारसम्भव

अर्थात् अरुणोदय कालीन बाल सूर्य के समान लाल वस्त्रों को पहिने हई तथा स्तनों के भार से नमित पार्वती, फूलों के गुच्छों से झुकी हुई नूतन ताम्र किसलय दल धारिणी लता के समान चली आ रही थी। मानवीय सौन्दर्य से प्राकृतिक सौन्दर्य की कई स्थानों पर समानता की गई है।

कालिदास ने अपने खण्डकाव्य मेघदूत में भी प्रकृति को आधार बनाकर मेघ को सन्देशवाहक के रुप में सम्बोधित हुए कहा है यथा–

''त्वय्यादातुं जलमवनते शार्ङ्गिणो वर्णचौरे,
तस्याः सिन्धो पृथुमापि तनुं दूरभावात्प्रवाहम्।
प्रेक्षिष्यन्ते गगनगतयो नूनमावर्ज्यदृष्टी,
रेकं मुक्तागुणमिव भुवः स्थूलमध्येन्द्रनीलम्।। – पूर्वमेघ

कृष्ण के समान श्याम रंग वाले तुम जब, दूर होने के कारण चौड़ा होने पर भी जिसका प्रवाह ज्ञात होता है, ऐसी उस नदी पर जल पीने के लिये झुकोगे, तब आकाशचारी देवगण दृष्टि नीचे कर उसे देखेंगे, जैसे मानो पृथ्वी के गले में मोतियों की माला पड़ी हो और उसके मध्य में बड़ा नीलम लगा हो।

कालिदास का नर्मदा वर्णन भी उपमा के सहयोग से अनुपम प्रतीत होता है यथा –

रेवां दृक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विषीर्णां।
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिभंगे गजस्य।। – पूर्वमेघ

हे मेघ! पाषाणों की वजह से विषम विंध्य के निम्न प्रदेश में बिखरी हुई रेवां तुम्हें ऐसी दिखाई देगी, मानो हाथी के शरीर पर बनाई गई सुन्दर रेखा रचना हो।

कालिदास के प्रकृति वर्णन में उनके द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम का अपना विशेष स्थान है। कालिदास प्रकृति की गोद में स्थित भारतीय पावन–आश्रमों की सुन्दरता का वर्णन भी करते हैं। इसका सुन्दर चित्र निम्न प्रकार से हैः–

''नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः
प्रस्निग्धाः क्वचिंदगिदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः
विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगा –
स्तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखांकिताः।।''
– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.13)

वृक्षों के खोखलों से तोतों के बच्चों के खाने से गिरे हुये धान नीचे

पड़े हैं। ऋषियों के द्वारा इंगुदीफलों के पीने के कारण पत्थर चिकने हो गये हैं। मृग इतने विश्वस्त हो गये हैं कि शब्द सुनकर भी नहीं भागते हैं। सरोवर का मार्ग भीगे वल्कल वस्त्रों से गिरते हुए जल की रेखाओं से चिन्हित है।

वस्तुतः आश्रम का शान्त, वन्य पशु–पक्षी जीवन युक्त वातावरण सचित्र सामने उपस्थित हो जाता है। प्रकृति वर्णन में ऋतु वर्णन भी अपना विशेष स्थान रखते हैं। ग्रीष्म ऋतु का यह एक स्वाभाविक चित्र उनके अभिज्ञानशाकुन्तलम् से है–

''सुभगसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गसुरभिवनवाताः।
प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसाः परिणामरमणीयाः।।
– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.3)

सलिल का स्नान अत्यन्त सुहावना लग रहा है। पाटल के खिले पुष्पों से वन की वायु सुगन्धित हो रही है। घने वृक्षों की छाया में सरलता से नींद आ रही है। दिन का अवसान अत्यन्त रमणीय प्रतीत होता है।

निष्कर्षत

कालिदास ने अपने सभी नाटकों में प्रकृति के प्रति अपना आकर्षण प्रकट किया है। सभी नाटकों में कालिदास ने प्रकृति की भूमि मुक्तरुप से अभिव्यक्त की है। कालिदास का प्रकृति–चित्रण कहीं पृष्ठभूमि के रुप में, कहीं उपमान के रुप में और कहीं उद्दीपन विभाव के रुप में भी है। अपने सभी काव्यों में कालिदास ने प्रकृति के प्रति अपनी हार्दिक प्रीति अभिव्यक्त की है। विक्रमोर्वषीय में मध्याह्न का यह सुन्दर वर्णन आँखों में छा जाता है–

उष्णालुः शिषिरे निशीदति तरोर्मूलालवाले शिखी
निर्भिद्योपरि कर्णिकारमुकुलान्यालीयते शट्पदः।
तप्तं वारि विहाय तीरनलिनीं कारण्डवः सेवते,
क्रीडावेश्मनि चैष प०जरषुकः क्लान्तो जलं याचते।।
– विक्रमोर्वषीय (2.22)

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
3. रघुवंशम्
4. मेघदूतम्
5. विक्रमोर्वशीयम्